Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

भारतीय उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र: एक समीक्षा अध्ययन

Arti Mourya
Research Scholar, Department of Commerce, Malwanchal University, Indore
Dr. More Tarachand Ambar
Supervisor, Department of Commerce, Malwanchal University, Indore
Dr. Kuldeep Agnihotri
Co- Supervisor, Professor & Principal, ISBA Institute of Professional Studies, Indore (M.P.)

सारांश
भारत आज विश्व का तीसरा सबसे बड़ा स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र बन चुका है, और यह उपलब्धि किसी एकल कारक का परिणाम नहीं, बल्कि नीतिगत इच्छाशक्ति, तकनीकी अवसंरचना, जनसांख्यिकीय लाभांश और वैश्विक पूँजी-प्रवाह के एक दुर्लभ संयोग का प्रतिफल है। पिछले एक दशक में 'स्टार्टअप इंडिया' जैसी सरकारी पहलों, सस्ती डेटा-दरों के कारण बढ़ती डिजिटल पहुँच, विशाल युवा जनसांख्यिकी और एक अत्यंत बड़े घरेलू बाज़ार के कारण देश में उद्यमिता का अभूतपूर्व विस्तार हुआ है।
यह समीक्षा पत्र भारतीय स्टार्टअप परिदृश्य के विकास-क्रम, इसकी प्रमुख संभावनाओं, सामने आने वाली संरचनात्मक एवं परिचालन-संबंधी चुनौतियों, वर्तमान संदर्भ में भविष्य की संभावित दिशा का व्यापक एवं समेकित विश्लेषण प्रस्तुत करता है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि 2020–2022 के 'यूनिकॉर्न उभार' के बाद पारिस्थितिकी तंत्र अब 'मूल्यांकन-केंद्रित वृद्धि' से 'लाभप्रदता-केंद्रित स्थिरता' की ओर परिपक्व हो रहा है। अक्टूबर 2024 तक DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स की संख्या लगभग 1.98 लाख (1,97,692) तक पहुँच गई, जिन्होंने 21 लाख से अधिक प्रत्यक्ष रोज़गार सृजित किए।
फिर भी फंडिंग की अनिश्चितता, लाभप्रदता का दबाव, प्रतिभा-प्रतिधारण, नियामकीय जटिलता और टियर-2/3 शहरों तक समान पहुँच जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं। यह पत्र इन सभी पहलुओं को आँकड़ों, क्षेत्रीय उदाहरणों एवं नीतिगत संदर्भ के साथ समेकित करता है, और इस निष्कर्ष पर पहुँचता है कि भारतीय उद्यमिता का दीर्घकालिक भविष्य उज्ज्वल है, बशर्ते वृद्धि के साथ-साथ गुणवत्ता, समावेशिता और वित्तीय अनुशासन को संतुलित रूप से प्राथमिकता दी जाए।

मुख्य शब्द (Keywords): स्टार्टअप इकोसिस्टम, उद्यमिता, यूनिकॉर्न, स्टार्टअप इंडिया, फंडिंग विंटर, नवाचार, डिजिटल इंडिया, रोज़गार सृजन, फिनटेक, डीप-टेक, यूनिट इकोनॉमिक्स, टियर-2/3 शहर।

1. प्रस्तावना

उद्यमिता किसी भी अर्थव्यवस्था की रीढ़ होती है। यह न केवल नवाचार और रोज़गार-सृजन को प्रोत्साहित करती है, बल्कि सामाजिक समस्याओं के समाधान का एक सशक्त माध्यम भी बनती है। एक जीवंत उद्यमशील वातावरण पूँजी को उत्पादक दिशाओं में प्रवाहित करता है, श्रम-बाज़ार में गतिशीलता लाता

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

है और प्रतिस्पर्धा के माध्यम से उपभोक्ताओं को बेहतर उत्पाद एवं सेवाएँ उपलब्ध कराता है। 'स्टार्टअप' शब्द उन नवोदित उद्यमों को संदर्भित करता है जो किसी नवाचारपूर्ण उत्पाद, सेवा या व्यवसाय-मॉडल के आधार पर तेज़ी से विस्तार (scale) करने की क्षमता रखते हैं। पारंपरिक लघु एवं मध्यम उद्यमों से स्टार्टअप इस अर्थ में भिन्न होते हैं कि उनका मूल लक्ष्य केवल स्थिर लाभ नहीं, बल्कि किसी दोहराने-योग्य एवं विस्तार-योग्य मॉडल के माध्यम से तीव्र वृद्धि होता है।

भारत में स्टार्टअप संस्कृति ने पिछले एक दशक में जिस गति से जड़ें जमाई हैं, वह विश्व-पटल पर उल्लेखनीय रही है। जहाँ एक ओर सिलिकॉन वैली दशकों से वैश्विक नवाचार का केंद्र रही है, वहीं भारत ने अपेक्षाकृत बहुत कम समय में एक ऐसा पारिस्थितिकी तंत्र विकसित कर लिया है जो न केवल मात्रा में, बल्कि क्षेत्रीय विविधता एवं सामाजिक प्रभाव में भी विशिष्ट है। यह विकास मुख्यतः 2010 के दशक के मध्य से तीव्र हुआ, जब स्मार्टफोन की सर्वव्यापकता और सस्ते इंटरनेट ने करोड़ों नए उपभोक्ताओं को डिजिटल अर्थव्यवस्था से जोड़ा।

भारत सरकार के अनुसार किसी इकाई को 'स्टार्टअप' की औपचारिक मान्यता तभी मिलती है जब वह निगमन के 10 वर्ष के भीतर हो, उसका वार्षिक कारोबार किसी भी वित्त वर्ष में ₹100 करोड़ से अधिक न रहा हो, और वह नवाचार, विकास या उत्पाद/प्रक्रिया-सुधार एवं विस्तार-योग्यता (scalability) पर केंद्रित हो। यह मान्यता उद्योग संवर्धन एवं आंतरिक व्यापार विभाग (DPIIT) द्वारा प्रदान की जाती है, जो कर-छूट, स्व-प्रमाणन तथा बौद्धिक संपदा संबंधी अनेक लाभों का द्वार खोलती है। यह परिभाषा महत्वपूर्ण है क्योंकि यह नीति-निर्माण, आँकड़ा-संग्रहण और लक्षित प्रोत्साहन के लिए एक स्पष्ट आधार प्रदान करती है।

इस समीक्षा पत्र का उद्देश्य भारतीय स्टार्टअप परिदृश्य के विकास-क्रम को समझना, इसकी संभावनाओं को रेखांकित करना, उन चुनौतियों का विश्लेषण करना जो इसकी राह में आती हैं, तथा 2024 के वर्तमान संदर्भ में भविष्य की संभावित दिशा प्रस्तुत करना है। यह अध्ययन मुख्यतः द्वितीयक स्रोतों—सरकारी आँकड़ों, उद्योग-रिपोर्टों, यूनिकॉर्न-ट्रैकरों एवं विश्लेषणात्मक लेखों—पर आधारित है, और इन्हें एक सुसंगत विश्लेषणात्मक ढाँचे में समेकित करने का प्रयास करता है ताकि पाठक को भारतीय उद्यमिता की वर्तमान स्थिति का संतुलित चित्र प्राप्त हो सके।

1.1 अध्ययन का महत्व एवं प्रासंगिकता

यह अध्ययन इसलिए प्रासंगिक है क्योंकि भारतीय स्टार्टअप परिदृश्य एक निर्णायक मोड़ पर खड़ा है। एक ओर जहाँ 2020–2022 के उभार ने अपार आशावाद उत्पन्न किया, वहीं उसके पश्चात आए सुधारात्मक चरण ने अनेक मूलभूत प्रश्न भी उठाए—क्या भारतीय स्टार्टअप मॉडल वास्तव में टिकाऊ है? क्या उच्च मूल्यांकन वास्तविक मूल्य-सृजन का प्रतिबिंब थे? और सबसे महत्वपूर्ण, आगे का मार्ग क्या है? इन प्रश्नों का संतुलित उत्तर खोजने के लिए परिदृश्य का समग्र एवं आँकड़ा-आधारित विश्लेषण आवश्यक है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

नीति-निर्माताओं, निवेशकों, संस्थापकों एवं शोधकर्ताओं—सभी के लिए इस परिदृश्य की स्पष्ट समझ मूल्यवान है। नीति-निर्माताओं के लिए यह प्रभावी प्रोत्साहन-संरचना तैयार करने में सहायक है; निवेशकों के लिए यह जोखिम एवं अवसर के मूल्यांकन में; और संस्थापकों के लिए यह यथार्थवादी अपेक्षाएँ निर्धारित करने एवं सामान्य त्रुटियों से बचने में। इस प्रकार यह पत्र केवल अकादमिक रुचि का विषय नहीं, बल्कि व्यावहारिक उपयोगिता का भी है।

2. भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का विकास-क्रम

2.1 ऐतिहासिक पृष्ठभूमि

भारत में आधुनिक स्टार्टअप लहर की नींव 2000 के दशक की आरंभिक IT एवं ई-कॉमर्स कंपनियों ने रखी। सूचना-प्रौद्योगिकी सेवा-क्षेत्र की वैश्विक सफलता ने न केवल विदेशी मुद्रा अर्जित की, बल्कि एक ऐसा तकनीकी प्रतिभा-पूल भी तैयार किया जो आगे चलकर उद्यमिता की ओर मुड़ा। इस आरंभिक चरण में ऑनलाइन यात्रा-बुकिंग, ई-कॉमर्स मार्केटप्लेस और डिजिटल भुगतान जैसे क्षेत्रों में अग्रणी कंपनियों ने यह सिद्ध किया कि भारतीय उपभोक्ता डिजिटल सेवाओं को अपनाने के लिए तैयार है।

परंतु इस लहर का वास्तविक संस्थागत स्वरूप 2016 में 'स्टार्टअप इंडिया' पहल के शुभारंभ के साथ सामने आया। इस पहल ने पंजीकरण-प्रक्रिया को सरल बनाया, कर-प्रोत्साहन दिए, और निवेशकों, इन्क्यूबेटरों एवं मेंटरों का एक संगठित नेटवर्क विकसित करने की दिशा में ठोस कदम उठाए। इसने उद्यमिता को एक सम्मानजनक एवं व्यवहार्य करियर-विकल्प के रूप में स्थापित करने में महत्वपूर्ण सांस्कृतिक भूमिका निभाई, जिससे अनेक प्रतिभाशाली युवा सुरक्षित नौकरियों के स्थान पर जोखिमपूर्ण किंतु संभावनापूर्ण उद्यम-निर्माण की ओर आकर्षित हुए।

2020 से 2022 के बीच वैश्विक तरलता (liquidity) के चरम पर रहने, महामारी-जनित तीव्र डिजिटल अंगीकरण और व्यापक निवेशक-भागीदारी के कारण भारत में अल्पावधि में दर्जनों यूनिकॉर्न उभरे। यह वह दौर था जब विश्वभर में ब्याज-दरें निम्न थीं और जोखिम-पूँजी प्रचुर मात्रा में उपलब्ध थी, जिसके फलस्वरूप मूल्यांकन तीव्र गति से बढ़े। इस अवधि ने भारतीय पारिस्थितिकी तंत्र को वैश्विक मानचित्र पर मज़बूती से स्थापित किया, यद्यपि इसने कुछ ऐसी संरचनात्मक कमज़ोरियाँ भी उत्पन्न कीं जो आगे चलकर 'फंडिंग विंटर' के दौरान उजागर हुईं।

2.2 वर्तमान स्थिति

वर्तमान में भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र परिपक्वता के एक नए चरण में प्रवेश कर चुका है। अक्टूबर 2024 तक DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स की संख्या 1,97,692 (लगभग 1.98 लाख) तक पहुँच गई—जो 2014 के लगभग 350 मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स की तुलना में एक असाधारण वृद्धि है। 2016 में 'स्टार्टअप इंडिया' मिशन के शुभारंभ के बाद, औसतन भारत में प्रत्येक घंटे एक नया स्टार्टअप पंजीकृत होता रहा है, जो इस विस्तार की गति एवं निरंतरता को दर्शाता है। उल्लेखनीय है कि अब लगभग 48% मान्यता प्राप्त स्टार्टअप्स में कम-से-कम एक महिला निदेशक हैं, जो पारिस्थितिकी तंत्र की बढ़ती समावेशिता का संकेत है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

यूनिकॉर्न—अर्थात् एक अरब डॉलर से अधिक मूल्यांकन वाले निजी स्टार्टअप—की संख्या भी क्रमशः बढ़ रही है। 2024 के अंत तक भारत में लगभग 125 स्टार्टअप यूनिकॉर्न क्लब में सम्मिलित थे, जिन्होंने सामूहिक रूप से 115 अरब डॉलर से अधिक की पूँजी जुटाई और 366 अरब डॉलर से अधिक का संयुक्त मूल्यांकन अर्जित किया। 2024 में छह नए स्टार्टअप यूनिकॉर्न बने—जिनमें लॉजिस्टिक्स, ई-कॉमर्स, AI एवं फिनटेक क्षेत्र अग्रणी रहे—जो पूर्ववर्ती वर्षों की तुलना में अपेक्षाकृत धीमी किंतु स्थिर गति को दर्शाता है। निकास-मार्ग (exit) भी परिपक्व हो रहे हैं; 2024 भारतीय पारिस्थितिकी तंत्र के लिए IPO की दृष्टि से एक सक्रिय वर्ष रहा। परिपक्व निकास-मार्ग किसी भी स्वस्थ पारिस्थितिकी तंत्र के लिए अनिवार्य हैं, क्योंकि वे आरंभिक निवेशकों को पूँजी वापस लौटाकर पुनर्निवेश का चक्र सक्षम बनाते हैं। एक महत्वपूर्ण गुणात्मक बदलाव यह है कि अब केवल मूल्यांकन ही सफलता का एकमात्र मापदंड नहीं रह गया है। निवेशक और संस्थापक दोनों अब टिकाऊ राजस्व-मॉडल, सकारात्मक इकाई-अर्थशास्त्र और स्पष्ट लाभप्रदता-मार्ग पर अधिक ध्यान दे रहे हैं। इस अर्थ में, 2024 का पारिस्थितिकी तंत्र 2021 के पारिस्थितिकी तंत्र से गुणात्मक रूप से भिन्न है—यह अधिक परिपक्व, अधिक अनुशासित और अधिक यथार्थवादी है। 2024 में कुल फंडिंग लगभग 15 अरब डॉलर रही, जो 2024 की समान अवधि की तुलना में लगभग 18% कम थी—यह संकेत देता है कि पूँजी-प्रवाह अब अधिक चयनात्मक एवं अनुशासित हो गया है।

2.3 प्रमुख आँकड़े एक नज़र में

निम्नलिखित तालिका 2024 के भारतीय स्टार्टअप परिदृश्य के प्रमुख परिमाणात्मक संकेतकों को संक्षेप में प्रस्तुत करती है:

सूचक (Indicator)	स्थिति (2024)
DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप	1,97,692 (~1.98 लाख)
सृजित प्रत्यक्ष रोज़गार	21.11 लाख+
2024 में कुल फंडिंग	~$15 अरब (2024 से ~18% कम)
यूनिकॉर्न की कुल संख्या	125
यूनिकॉर्न का संयुक्त मूल्यांकन	$366 अरब+
यूनिकॉर्न द्वारा जुटाई पूँजी	$115 अरब+
वैश्विक रैंकिंग	तीसरा सबसे बड़ा इकोसिस्टम

ये आँकड़े दर्शाते हैं कि चुनौतीपूर्ण वैश्विक वित्तपोषण-वातावरण के बावजूद भारत में उद्यमशीलता की गतिविधि निरंतर तीव्र बनी हुई है। विशेष रूप से रोज़गार-सृजन का आँकड़ा सामाजिक-आर्थिक दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह दर्शाता है कि स्टार्टअप केवल पूँजी-केंद्रित परिघटना नहीं, बल्कि व्यापक आजीविका-सृजन का माध्यम भी बन चुके हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

3. संभावनाएँ (Opportunities & Potential)

भारतीय स्टार्टअप परिदृश्य की संभावनाएँ अनेक गहरे संरचनात्मक कारकों से जुड़ी हैं, जो इसे दीर्घकालिक रूप से आकर्षक बनाती हैं। ये कारक क्षणिक प्रवृत्तियाँ नहीं, बल्कि स्थायी संरचनात्मक लाभ हैं, और यही कारण है कि अल्पकालिक वित्तीय उतार-चढ़ाव के बावजूद वैश्विक निवेशकों की भारत में रुचि बनी हुई है।

3.1 विशाल घरेलू बाज़ार

लगभग 1.4 अरब की जनसंख्या और तेज़ी से बढ़ते डिजिटल अंगीकरण के साथ भारत स्टार्टअप्स के लिए एक अद्वितीय बाज़ार प्रदान करता है। विशेषज्ञों का मानना है कि पूँजी और प्रतिभा भले ही वैश्विक रूप से उपलब्ध हों, पर भारत की सबसे बड़ी संपत्ति इसका घरेलू बाज़ार है—जहाँ अनूठी समस्याएँ हैं जिन्हें वैश्विक उत्पाद पर्याप्त रूप से हल नहीं करते, और जहाँ मूल्य-संवेदनशीलता (price sensitivity) दक्षता-आधारित नवाचार को बाध्य करती है।

इस बाज़ार की एक विशेषता इसकी विशालता के साथ-साथ इसकी विविधता भी है। आय-स्तर, भाषा, उपभोग-प्रवृत्ति और डिजिटल साक्षरता में व्यापक भिन्नता होने के कारण भारतीय बाज़ार वास्तव में अनेक उप-बाज़ारों का समुच्चय है। यह विविधता एक ओर जटिलता उत्पन्न करती है, तो दूसरी ओर असंख्य विशिष्ट अवसर भी प्रदान करती है, क्योंकि प्रत्येक उप-खंड के लिए अनुकूलित समाधान विकसित किए जा सकते हैं। मूल्य-संवेदनशीलता के कारण भारतीय स्टार्टअप्स को अत्यंत किफायती लागत-संरचना पर कार्य करना पड़ता है, और इस प्रक्रिया में वे अक्सर ऐसे नवाचार विकसित कर लेते हैं जो बाद में वैश्विक रूप से प्रासंगिक सिद्ध होते हैं।

3.2 अनुकूल जनसांख्यिकी एवं प्रतिभा-पूल

भारत की युवा एवं तकनीकी रूप से दक्ष जनसंख्या उद्यमिता के लिए एक मज़बूत आधार है। विश्व की सबसे बड़ी कार्यशील-आयु जनसंख्या वाले देशों में से एक होने के नाते, भारत के पास संस्थापकों एवं कर्मचारियों दोनों की प्रचुर आपूर्ति है। इंजीनियरिंग एवं प्रबंधन संस्थानों का विशाल नेटवर्क प्रतिवर्ष कुशल पेशेवरों की एक बड़ी संख्या तैयार करता है, जो संस्थापक और कर्मचारी दोनों रूपों में पारिस्थितिकी तंत्र को ऊर्जा प्रदान करते हैं।

इस जनसांख्यिकीय लाभांश (demographic dividend) का महत्व इसलिए और बढ़ जाता है क्योंकि अनेक विकसित अर्थव्यवस्थाएँ वृद्ध होती जनसंख्या एवं घटते कार्यबल की समस्या से जूझ रही हैं। भारत में, इसके विपरीत, आने वाले दशकों तक एक युवा, महत्वाकांक्षी एवं डिजिटल रूप से सहज जनसंख्या उपलब्ध रहेगी। यह न केवल नवाचार के लिए मानव-पूँजी प्रदान करती है, बल्कि एक ऐसा विस्तृत उपभोक्ता-आधार भी निर्मित करती है जो नई तकनीकों एवं सेवाओं को शीघ्रता से अपनाने के लिए तत्पर रहता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

3.3 मोबाइल-प्रथम (Mobile-first) संरचना

भारत की इंटरनेट-पहुँच मुख्यतः स्मार्टफोन-आधारित है। डेस्कटॉप-केंद्रित पश्चिमी बाज़ारों के विपरीत, करोड़ों भारतीय उपयोगकर्ताओं का इंटरनेट से पहला परिचय ही स्मार्टफोन के माध्यम से हुआ है। अनुमानतः 85% से अधिक भारतीय स्टार्टअप प्राथमिक रूप से मोबाइल के लिए निर्माण करते हैं, जबकि अमेरिका में यह अनुपात लगभग 40% है। यह 'मोबाइल-प्रथम' दृष्टिकोण उत्पादों को व्यापक जनसंख्या तक पहुँचाने में अत्यंत सहायक है।

इस संरचना का एक रणनीतिक लाभ यह है कि मोबाइल-प्रथम उत्पाद स्वाभाविक रूप से सरल, हल्के एवं कम-बैंडविड्थ-अनुकूल होने के लिए अभिकल्पित किए जाते हैं, जो उन्हें न केवल भारत के, बल्कि अन्य उभरती अर्थव्यवस्थाओं के बाज़ारों के लिए भी उपयुक्त बनाता है। डिजिटल भुगतान-अवसंरचना की व्यापक स्वीकार्यता ने इस मोबाइल-प्रथम परिवेश को और सशक्त किया है, जिससे लेन-देन घर्षण-रहित (frictionless) हो गए हैं और छोटे-से-छोटे व्यापारी भी डिजिटल अर्थव्यवस्था में सम्मिलित हो सके हैं।

3.4 क्षेत्रीय विविधता एवं नवाचार के नए क्षेत्र

फिनटेक और ई-कॉमर्स अब भी अग्रणी क्षेत्र बने हुए हैं, परंतु अब डीप-टेक, अंतरिक्ष-प्रौद्योगिकी, कृत्रिम बुद्धिमत्ता (AI), लॉजिस्टिक्स, स्वच्छ ऊर्जा और स्वास्थ्य-तकनीक जैसे क्षेत्रों में भी उल्लेखनीय गतिविधि हो रही है। यह क्षेत्रीय विविधीकरण पारिस्थितिकी तंत्र की परिपक्वता का एक महत्वपूर्ण संकेतक है, क्योंकि यह दर्शाता है कि उद्यमशील ऊर्जा अब केवल उपभोक्ता-इंटरनेट तक सीमित नहीं रही, बल्कि अनुसंधान-गहन एवं उच्च-तकनीक क्षेत्रों की ओर भी विस्तृत हो रही है।

उदाहरणस्वरूप, अंतरिक्ष-तकनीक कंपनी स्काईरूट एयरोस्पेस तथा AI-क्लाउड कंपनी नेसा का यूनिकॉर्न क्लब में प्रवेश इस विविधता का प्रमाण है। ऐसे डीप-टेक उद्यम दीर्घकालिक रणनीतिक महत्व रखते हैं क्योंकि वे ऐसी तकनीकी क्षमताएँ निर्मित करते हैं जिन्हें सरलता से दोहराया नहीं जा सकता, और जो राष्ट्रीय आत्मनिर्भरता की दृष्टि से भी मूल्यवान हैं। सबसे आशाजनक स्टार्टअप वे हैं जो 'विशिष्ट भारतीय समस्याओं'—कृषि-आपूर्ति श्रृंखला की अकुशलता, ग्रामीण स्वास्थ्य-पहुँच, स्थानीय-भाषा सामग्री और लघु व्यवसायों के लिए वित्तीय समावेशन—को भारतीय परिस्थितियों के अनुकूल प्रौद्योगिकी से हल करते हैं। ऐसे उद्यम न केवल वाणिज्यिक रूप से सफल होते हैं, बल्कि व्यापक सामाजिक प्रभाव भी उत्पन्न करते हैं।

3.5 सरकारी समर्थन एवं नीतिगत ढाँचा

'स्टार्टअप इंडिया', 'डिजिटल इंडिया' और 'मेक इन इंडिया' जैसी पहलों ने एक सक्षम वातावरण तैयार किया है। DPIIT मान्यता आयकर-छूट (धारा 80-IAC), श्रम एवं पर्यावरण कानूनों में स्व-प्रमाणन, पेटेंट/IPR में फास्ट-ट्रैक सहायता, सार्वजनिक खरीद में छूट और विभिन्न फंडिंग-योजनाओं तक पहुँच प्रदान करती है। यह बहुस्तरीय समर्थन-ढाँचा संस्थापकों के लिए आरंभिक जोखिम एवं अनुपालन-बोझ को कम करता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

प्रमुख सरकारी योजनाओं में निम्नलिखित उल्लेखनीय हैं:
स्टार्टअप इंडिया सीड फंड योजना (SISFS): विचार-चरण के स्टार्टअप्स को प्रोटोटाइप-विकास, परीक्षण एवं बाज़ार-प्रवेश हेतु आरंभिक अनुदान प्रदान करती है।
क्रेडिट गारंटी योजना (CGTMSE): बैंकों एवं वित्तीय संस्थानों के माध्यम से बिना संपार्श्विक ऋण की सुविधा प्रदान करती है।
फंड ऑफ़ फंड्स योजना (FFS) 2.0: सेबी-पंजीकृत वेंचर कैपिटल फंडों के माध्यम से अप्रत्यक्ष पूँजी-सहायता उपलब्ध कराती है, जिससे निजी निवेश को प्रोत्साहन मिलता है।
अटल नवाचार मिशन (AIM): 100+ अटल इन्क्यूबेशन केंद्रों के माध्यम से 5,500+ स्टार्टअप्स को इन्क्यूबेशन एवं मेंटरशिप सहायता प्रदान करता है।
एक उल्लेखनीय प्रवृत्ति के रूप में अनेक राज्य सरकारें भी अपनी स्टार्टअप-नीतियाँ सक्रिय रूप से लागू कर रही हैं—जैसे दिल्ली, हरियाणा एवं तेलंगाना की हाल की पहलें—जिससे संघीय एवं राज्य-स्तरीय प्रोत्साहनों का एक बहुस्तरीय ढाँचा निर्मित हो रहा है। यह विकेंद्रीकृत नीतिगत समर्थन समावेशिता की दृष्टि से महत्वपूर्ण है, क्योंकि यह स्थानीय आवश्यकताओं के अनुरूप उद्यमिता को प्रोत्साहित करता है।
3.6 टियर-2 एवं टियर-3 शहरों का उदय
स्टार्टअप गतिविधि अब केवल बेंगलुरु, दिल्ली-NCR और मुंबई तक सीमित नहीं रही। जयपुर, इंदौर, कोच्चि, चंडीगढ़, कोयंबटूर और भुवनेश्वर जैसे शहरों में स्टार्टअप-पंजीकरण में लगभग 45% वार्षिक वृद्धि देखी जा रही है, जो भारतीय उद्यमिता की 'अगली लहर' का संकेत देती है। यह भौगोलिक विकेंद्रीकरण समावेशी आर्थिक विकास की दृष्टि से अत्यंत महत्वपूर्ण है।
इस प्रवृत्ति के पीछे अनेक कारक हैं: महानगरों की तुलना में कम परिचालन-लागत, स्थानीय प्रतिभा की उपलब्धता जो अब अपने गृह-नगरों में ही अवसर तलाश रही है, बेहतर होती डिजिटल अवसंरचना, और दूरस्थ-कार्य संस्कृति का सामान्यीकरण। ये छोटे शहर अक्सर ऐसी स्थानीय समस्याओं के निकट होते हैं जिन्हें महानगर-केंद्रित संस्थापक सहजता से नहीं समझ पाते, जिससे वहाँ के उद्यमियों को विशिष्ट बाज़ार-अंतर्दृष्टि का लाभ मिलता है। यदि मेंटरशिप एवं निवेशक-नेटवर्क का विस्तार इन क्षेत्रों तक हो सके, तो ये शहर आने वाले दशक में नवाचार के नए केंद्र बन सकते हैं।

4. चुनौतियाँ (Challenges)

तीव्र विकास के बावजूद भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र अनेक संरचनात्मक एवं परिचालन-संबंधी चुनौतियों का सामना करता है। इन चुनौतियों की स्पष्ट समझ इसलिए आवश्यक है क्योंकि केवल संभावनाओं पर ध्यान केंद्रित करना एक अधूरा एवं भ्रामक चित्र प्रस्तुत करेगा। एक परिपक्व विश्लेषण के लिए अवसरों एवं बाधाओं—दोनों का संतुलित मूल्यांकन अनिवार्य है।

4.1 फंडिंग की अनिश्चितता और 'फंडिंग विंटर'

2022–2023 के दौरान वैश्विक वेंचर कैपिटल के सिकुड़ने से भारतीय स्टार्टअप-फंडिंग में लगभग 60% की गिरावट आई—जिसे 'फंडिंग विंटर' कहा गया। बढ़ती वैश्विक ब्याज-दरों, भू-राजनीतिक अनिश्चितता

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

और जोखिम के प्रति निवेशकों की बदलती धारणा ने मिलकर पूँजी-प्रवाह को संकुचित कर दिया। यह दौर पीड़ादायक परंतु अनेक अर्थों में स्पष्टता लाने वाला रहा।

जो कंपनियाँ केवल 'कैश-बर्न' (अर्थात् निवेशकों के धन से आय से अधिक व्यय) के बल पर बढ़ रही थीं, उन्हें या तो लाभप्रदता सिद्ध करनी पड़ी या अस्तित्व-संकट का सामना करना पड़ा। इस प्रक्रिया ने पारिस्थितिकी तंत्र से अव्यवहार्य मॉडलों को छाँटने का कार्य किया। निवेशक अब अधिक चयनात्मक हो गए हैं तथा 'यूनिट इकोनॉमिक्स', सकल-मार्जिन और स्पष्ट लाभप्रदता-मार्ग को प्राथमिकता देते हैं। दीर्घकालिक दृष्टि से यह अनुशासन स्वागत-योग्य है, यद्यपि अल्पकाल में इसने अनेक उद्यमों के लिए कठिनाई उत्पन्न की और रोज़गार-छँटनी का दौर भी देखा गया।

4.2 लाभप्रदता का दबाव और उच्च असफलता-दर

भारत में स्टार्टअप की पाँच वर्ष से अधिक जीवित रहने की दर लगभग 10–15% आँकी जाती है, जो उच्च असफलता-दर को दर्शाती है। यह आँकड़ा यद्यपि चिंताजनक प्रतीत होता है, परंतु यह उद्यमिता की अंतर्निहित प्रकृति का भी परिचायक है—जहाँ अनेक प्रयोग विफल होते हैं और कुछ ही असाधारण रूप से सफल होते हैं। अनेक यूनिकॉर्न बाद में एक अरब डॉलर के मूल्यांकन से नीचे खिसक गए, जो यह स्पष्ट करता है कि उच्च मूल्यांकन स्थायित्व की गारंटी नहीं है। इसी प्रकार, अक्टूबर 2024 तक लगभग 6,385 DPIIT-मान्यता प्राप्त स्टार्टअप बंद (dissolved/struck-off) के रूप में वर्गीकृत किए गए, जो किसी भी नवाचार-संचालित बाज़ार में सामान्य 'churn' का परिचायक है।

एडटेक क्षेत्र का अनुभव—जहाँ यह धारणा कि डिजिटल शिक्षा बड़े पैमाने पर पारंपरिक शिक्षा का स्थान ले लेगी, समय से पूर्व एवं अतिशयोक्तिपूर्ण सिद्ध हुई—इस बात का सटीक उदाहरण है कि केवल पूँजी-संचालित वृद्धि टिकाऊ नहीं होती। महामारी के दौरान असाधारण माँग देखकर अनेक एडटेक कंपनियों ने आक्रामक विस्तार किया, किंतु जैसे ही विद्यालय पुनः खुले और माँग सामान्य हुई, उनके मॉडल की कमज़ोरियाँ उजागर हो गईं। यह प्रकरण भविष्य के संस्थापकों के लिए एक महत्वपूर्ण शिक्षा प्रदान करता है कि अस्थायी माँग-उछाल को स्थायी प्रवृत्ति मान लेना जोखिमपूर्ण है।

4.3 नियामकीय एवं अनुपालन-जटिलता

यद्यपि सरकारी योजनाएँ सहायक हैं, फिर भी संस्थापकों को अनुमोदन में विलंब, छोटे व्यवसायों के बीच जागरूकता की कमी, इन्क्यूबेटर-चयन पर निर्भरता और जटिल दस्तावेज़ीकरण जैसी बाधाओं का सामना करना पड़ता है। अनेक संस्थापक, विशेषकर गैर-महानगरीय पृष्ठभूमि से आने वाले, उपलब्ध योजनाओं एवं प्रोत्साहनों की पूरी जानकारी के अभाव में उनका लाभ नहीं उठा पाते।

इसके अतिरिक्त, GST-रिफंड में विलंब, इनवॉइस-मिलान संबंधी त्रुटियाँ और बहुस्तरीय अनुपालन की जटिलताएँ नकदी-प्रवाह को प्रत्यक्ष रूप से प्रभावित करती हैं। आरंभिक-चरण के स्टार्टअप्स के लिए, जिनके पास सीमित कार्यशील पूँजी होती है, ऐसे विलंब अस्तित्व-संबंधी चुनौती बन सकते हैं। अनुपालन की यह जटिलता प्रायः उद्यमी का बहुमूल्य समय एवं संसाधन उत्पाद-निर्माण से हटाकर प्रशासनिक कार्यों में लगा देती है, जिससे नवाचार की गति धीमी पड़ती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

4.4 प्रतिभा-प्रतिधारण और मानव-पूँजी

कुशल प्रतिभा की समग्र उपलब्धता के बावजूद, स्टार्टअप्स के लिए शीर्ष प्रतिभा को आकर्षित करना और बनाए रखना एक गंभीर चुनौती है। बड़ी टेक कंपनियों एवं वैश्विक नियोक्ताओं से प्रतिस्पर्धा, वेतन-दबाव तथा उच्च 'अट्रिशन' (कर्मचारी-त्याग) इस समस्या को और जटिल बनाते हैं। आरंभिक-चरण के स्टार्टअप्स प्रायः बड़ी कंपनियों के समकक्ष वेतन एवं नौकरी-सुरक्षा प्रदान नहीं कर पाते, जिससे अनुभवी पेशेवरों को आकर्षित करना कठिन हो जाता है।

इस चुनौती से निपटने के लिए अनेक स्टार्टअप कर्मचारी स्टॉक-स्वामित्व योजनाओं (ESOPs), लचीली कार्य-संस्कृति और उद्देश्य-संचालित कार्य-वातावरण का सहारा लेते हैं। तथापि, विशेष रूप से डीप-टेक एवं AI जैसे विशिष्ट कौशल वाले क्षेत्रों में, योग्य प्रतिभा की कमी एक वास्तविक बाधा बनी हुई है, जो वैश्विक स्तर पर ऐसी प्रतिभा की तीव्र माँग के कारण और गंभीर हो जाती है।

4.5 बुनियादी ढाँचा एवं असमान पहुँच

टियर-2/3 शहरों में वृद्धि के बावजूद, मेंटरशिप, गुणवत्तापूर्ण इन्क्यूबेशन-सुविधाओं और परिपक्व निवेशक-नेटवर्क तक पहुँच अब भी कुछ महानगरों में केंद्रित है। एक छोटे शहर का प्रतिभाशाली संस्थापक भले ही उत्कृष्ट विचार रखता हो, परंतु उसे प्रायः उस मार्गदर्शन, नेटवर्क एवं प्रारंभिक पूँजी तक पहुँच नहीं मिल पाती जो एक महानगरीय संस्थापक के लिए सहज उपलब्ध होती है।

इसके अतिरिक्त, परिवर्तनशील इंटरनेट-गुणवत्ता, विद्युत-आपूर्ति की अनिश्चितता और भाषाई विविधता उत्पाद-निर्माण एवं वितरण को जटिल बनाती है। 22 से अधिक प्रमुख भाषाओं वाले देश में सही मायने में समावेशी उत्पाद बनाने के लिए बहुभाषी डिज़ाइन एवं स्थानीयकरण में महत्वपूर्ण निवेश आवश्यक होता है, जो संसाधन-सीमित स्टार्टअप्स के लिए एक अतिरिक्त भार है।

4.6 वैश्विक प्रतिस्पर्धा एवं बाहरी निर्भरता

भारतीय स्टार्टअप्स को न केवल घरेलू, बल्कि सुदृढ़ वैश्विक उत्पादों से भी प्रतिस्पर्धा करनी पड़ती है, जिनके पास प्रायः अधिक पूँजी, परिपक्व तकनीक एवं वैश्विक ब्रांड-पहचान होती है। कई क्षेत्रों में प्रौद्योगिकी-घटकों, क्लाउड-अवसंरचना एवं पूँजी के लिए विदेशी स्रोतों पर निर्भरता बनी रहती है, जो दीर्घकालिक रणनीतिक स्वायत्तता की दृष्टि से एक चिंता का विषय है।

इसके अतिरिक्त, चूँकि भारतीय स्टार्टअप-फंडिंग का एक बड़ा भाग विदेशी संस्थागत निवेशकों से आता है, वैश्विक आर्थिक उतार-चढ़ाव का सीधा एवं तीव्र प्रभाव घरेलू फंडिंग-वातावरण पर पड़ता है। 'फंडिंग विंटर' इसी बाहरी संवेदनशीलता का परिणाम था। एक अधिक सुदृढ़ घरेलू पूँजी-आधार का विकास इस निर्भरता को कम करने तथा पारिस्थितिकी तंत्र को बाह्य आघातों के प्रति अधिक प्रत्यास्थ बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम होगा।

4.7 चुनौतियों का सारांश

निम्नलिखित तालिका उपर्युक्त प्रमुख चुनौतियों एवं उनके मुख्य प्रभावों को संक्षेप में प्रस्तुत करती है:

चुनौती	मुख्य प्रभाव

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

फंडिंग विंटर / पूँजी की कमी	विस्तार धीमा, कई स्टार्टअप बंद
लाभप्रदता का दबाव	मूल्यांकन में गिरावट, कठोर लागत-नियंत्रण
नियामकीय जटिलता	अनुपालन-लागत एवं विलंब
प्रतिभा-प्रतिधारण	उच्च अट्रिशन, वेतन-दबाव
असमान भौगोलिक पहुँच	मेंटरशिप/निवेश का महानगरों में केंद्रण
वैश्विक प्रतिस्पर्धा	बाहरी पूँजी एवं तकनीक पर निर्भरता

5. विश्लेषण: परिपक्वता की ओर संक्रमण

उपर्युक्त संभावनाओं एवं चुनौतियों को समग्र रूप से देखने पर एक केंद्रीय विषय उभरता है: भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र एक मूलभूत संक्रमण (transition) से गुज़र रहा है—एक ऐसा संक्रमण जो मात्रात्मक विस्तार से गुणात्मक परिपक्वता की ओर अग्रसर है। इस खंड में हम इस संक्रमण के स्वरूप का विश्लेषण करते हैं।

5.1 'वृद्धि किसी भी कीमत पर' से 'टिकाऊ वृद्धि' की ओर

2020–2022 के उभार के दौरान प्रचलित मानसिकता 'वृद्धि किसी भी कीमत पर' थी, जहाँ बाज़ार-हिस्सेदारी अर्जित करने के लिए भारी छूट एवं विपणन-व्यय को उचित ठहराया जाता था, भले ही इकाई-स्तर पर हानि हो रही हो। यह रणनीति निम्न-ब्याज एवं प्रचुर-पूँजी वाले वातावरण में व्यवहार्य प्रतीत होती थी। परंतु फंडिंग विंटर ने इस मॉडल की सीमाओं को उजागर कर दिया।

आज की प्रचलित मानसिकता 'टिकाऊ एवं लाभदायक वृद्धि' की है, जहाँ संस्थापक प्रत्येक ग्राहक से अर्जित मूल्य, ग्राहक-अधिग्रहण-लागत एवं दीर्घकालिक प्रतिधारण पर केंद्रित रहते हैं। यह परिवर्तन यद्यपि वृद्धि-दर को अल्पकाल में धीमा कर सकता है, परंतु यह व्यवसायों को आधारभूत रूप से अधिक सुदृढ़ बनाता है। इस अर्थ में, फंडिंग विंटर को पारिस्थितिकी तंत्र के लिए एक आवश्यक एवं स्वास्थ्यप्रद सुधारात्मक चरण के रूप में देखा जा सकता है।

5.2 निकास-मार्गों की परिपक्वता

किसी भी स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की दीर्घकालिक व्यवहार्यता काफी हद तक उसके निकास-मार्गों (exit pathways) की परिपक्वता पर निर्भर करती है। यदि आरंभिक निवेशकों को अपने निवेश पर समुचित प्रतिफल नहीं मिलता, तो पूँजी-प्रवाह अंततः सूख जाता है। इस दृष्टि से, हाल के वर्षों में सार्वजनिक निर्गम (IPO) एवं अधिग्रहण के बढ़ते उदाहरण एक अत्यंत सकारात्मक संकेत हैं।

लगभग 27 यूनिकॉर्न का सार्वजनिक होना यह दर्शाता है कि भारतीय सार्वजनिक बाज़ार अब प्रौद्योगिकी-संचालित व्यवसायों को आत्मसात करने के लिए पर्याप्त परिपक्व हो चुके हैं। यह विकास एक सद्गुण-चक्र (virtuous cycle) उत्पन्न करता है: सफल निकास से प्राप्त पूँजी एवं अनुभव प्रायः नए उद्यमों एवं फंडों के रूप में पुनः पारिस्थितिकी तंत्र में प्रवाहित होते हैं, जिससे यह स्वयं को पोषित करने वाली प्रणाली बन जाती है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

5.3 पूँजी का गुणात्मक पुनर्संयोजन

एक और महत्वपूर्ण प्रवृत्ति पूँजी का गुणात्मक पुनर्संयोजन है। जहाँ पहले अधिकांश पूँजी उपभोक्ता-इंटरनेट एवं ई-कॉमर्स की ओर प्रवाहित होती थी, वहीं अब इसका एक बढ़ता हुआ अंश डीप-टेक, AI, अंतरिक्ष-तकनीक, जलवायु-तकनीक एवं विनिर्माण की ओर मुड़ रहा है। ये क्षेत्र दीर्घ-अवधि के, धैर्यवान पूँजी की माँग करते हैं, क्योंकि इनमें अनुसंधान-विकास-चक्र लंबे होते हैं।

इस पुनर्संयोजन का दीर्घकालिक महत्व यह है कि ये क्षेत्र अधिक गहरी एवं रक्षात्मक तकनीकी क्षमताओं का निर्माण करते हैं, जो भारत को केवल एक विशाल उपभोक्ता-बाज़ार से आगे बढ़ाकर एक वास्तविक नवाचार-केंद्र के रूप में स्थापित करने की क्षमता रखते हैं। हाल के वर्षों के नीतिगत सुधार, जो अनुसंधान-गहन एवं उभरते क्षेत्रों को सशक्त करने पर केंद्रित हैं, इसी रणनीतिक दिशा का प्रतिबिंब हैं।

6. भविष्य की दिशा

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर, आगामी वर्षों में भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र के निम्नलिखित प्रमुख रुझान संभावित प्रतीत होते हैं। ये रुझान परस्पर-संबद्ध हैं और मिलकर पारिस्थितिकी तंत्र के अगले चरण की रूपरेखा प्रस्तुत करते हैं:

लाभप्रदता-केंद्रित विकास: निवेशक एवं संस्थापक अब टिकाऊ इकाई-अर्थशास्त्र और वास्तविक बाज़ार-प्रभाव को प्राथमिकता देंगे, जिससे व्यवसाय अधिक सुदृढ़ एवं प्रत्यास्थ बनेंगे।

डीप-टेक एवं AI का उभार: कृत्रिम बुद्धिमत्ता, अंतरिक्ष-तकनीक, सेमीकंडक्टर और जलवायु-तकनीक जैसे अनुसंधान-गहन क्षेत्रों में नवाचार बढ़ेगा। हाल के नीतिगत सुधार इन्हीं क्षेत्रों को सशक्त करने की दिशा में अग्रसर हैं।

वैश्विक विस्तार: अधिक भारतीय स्टार्टअप अंतरराष्ट्रीय बाज़ारों को लक्षित करेंगे, जिससे 'भारत में निर्मित, विश्व के लिए' का मॉडल मज़बूत होगा।

भौगोलिक विकेंद्रीकरण: टियर-2/3 शहर नवाचार के नए केंद्र बनेंगे, जिससे रोज़गार एवं अवसर अधिक समावेशी एवं भौगोलिक रूप से संतुलित होंगे।

स्थानीय समस्याओं पर केंद्रण: कृषि, स्वास्थ्य, वित्तीय समावेशन और स्थानीय-भाषा प्रौद्योगिकी जैसे 'विशिष्ट भारतीय' क्षेत्रों में सर्वाधिक स्थायी मूल्य-सृजन होगा।

परिपक्व निकास-मार्ग: IPO एवं अधिग्रहण के बढ़ते उदाहरण निवेशकों को विश्वास एवं तरलता प्रदान करेंगे, जिससे पुनर्निवेश का चक्र सशक्त होगा।

विशेषज्ञों का अनुमान है कि स्थिर निवेश-प्रवाह, बेहतर होते बुनियादी ढाँचे और अनुकूल युवा जनसांख्यिकी के बल पर भारत 2030 तक विश्व के शीर्ष-तीन स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्रों में अपना स्थान बनाए रखेगा, और संभवतः कुछ क्षेत्रों में नेतृत्वकारी भूमिका भी अर्जित करेगा। तथापि, इस संभावना को साकार करने के लिए लाभप्रदता, नियामकीय-सरलीकरण और समावेशी-पहुँच पर निरंतर एवं संतुलित ध्यान आवश्यक होगा। भविष्य उज्ज्वल अवश्य है, परंतु यह स्वतः-सिद्ध नहीं—इसके लिए सतत नीतिगत प्रयास एवं उद्यमशील अनुशासन अपेक्षित हैं।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

7. सुझाव

उपर्युक्त विश्लेषण के आधार पर, भारतीय स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र की दीर्घकालिक एवं समावेशी वृद्धि सुनिश्चित करने हेतु निम्नलिखित सुझाव प्रस्तुत किए जाते हैं:

1. नियामकीय अनुपालन को और सरल बनाना तथा GST/IPR प्रक्रियाओं में विलंब कम करना, ताकि संस्थापकों का समय एवं संसाधन प्रशासनिक कार्यों के बजाय नवाचार में लगे।
2. टियर-2/3 शहरों में इन्क्यूबेशन, मेंटरशिप एवं निवेशक-नेटवर्क का सुनियोजित विस्तार करना, ताकि भौगोलिक असमानता कम हो और प्रतिभा अपने क्षेत्र में ही अवसर पा सके।
3. डीप-टेक एवं अनुसंधान-गहन स्टार्टअप्स हेतु दीर्घकालिक 'धैर्यवान पूँजी' (patient capital) को प्रोत्साहित करना, क्योंकि इन क्षेत्रों में प्रतिफल-अवधि स्वाभाविक रूप से लंबी होती है।
4. लाभप्रदता एवं सुदृढ़ इकाई-अर्थशास्त्र पर आधारित व्यवसाय-संस्कृति को बढ़ावा देना, ताकि अल्पकालिक मूल्यांकन के स्थान पर दीर्घकालिक मूल्य-सृजन प्राथमिकता बने।
5. स्थानीय भाषाओं एवं ग्रामीण आवश्यकताओं के अनुरूप समावेशी उत्पाद-निर्माण को प्रोत्साहन देना, जिससे डिजिटल लाभ व्यापक जनसंख्या तक पहुँचे।
6. संस्थापकों के बीच जागरूकता बढ़ाना ताकि वे विभिन्न सरकारी योजनाओं एवं प्रोत्साहनों का प्रभावी उपयोग कर सकें, विशेषकर गैर-महानगरीय क्षेत्रों में।
7. घरेलू संस्थागत पूँजी-आधार को सुदृढ़ करना, ताकि विदेशी पूँजी पर निर्भरता घटे और पारिस्थितिकी तंत्र बाह्य आघातों के प्रति अधिक प्रत्यास्थ बने।

8. निष्कर्ष

भारतीय स्टार्टअप एवं उद्यमिता परिदृश्य ने पिछले एक दशक में एक उल्लेखनीय यात्रा तय की है—एक उभरते हुए प्रयोग से लेकर विश्व के तीसरे सबसे बड़े पारिस्थितिकी तंत्र तक। लगभग 1.98 लाख (1,97,692) मान्यता प्राप्त स्टार्टअप, 125 यूनिकॉर्न और 21 लाख से अधिक प्रत्यक्ष रोज़गार इस सफलता के ठोस परिमाणात्मक प्रमाण हैं। यह यात्रा नीतिगत इच्छाशक्ति, तकनीकी अवसंरचना, जनसांख्यिकीय लाभांश और उद्यमशील महत्वाकांक्षा के सम्मिलित प्रयास का परिणाम है।

साथ ही, फंडिंग विंटर के अनुभव ने पारिस्थितिकी तंत्र को 'किसी भी कीमत पर वृद्धि' से 'टिकाऊ एवं लाभदायक वृद्धि' की ओर मोड़ दिया है, जो दीर्घकालिक दृष्टि से एक अत्यंत स्वस्थ संकेत है। यह परिपक्वता-संक्रमण भले ही अल्पकाल में पीड़ादायक रहा हो, परंतु इसने पारिस्थितिकी तंत्र की आधारभूत संरचना को अधिक सुदृढ़ बनाया है।

फिर भी, फंडिंग की अनिश्चितता, उच्च असफलता-दर, नियामकीय जटिलता, प्रतिभा-प्रतिधारण और असमान भौगोलिक पहुँच जैसी चुनौतियाँ बनी हुई हैं, जिनका समाधान सोच-समझकर एवं चरणबद्ध रूप से करना आवश्यक है। भारत की सबसे बड़ी शक्ति इसका विशाल घरेलू बाज़ार, युवा प्रतिभा और 'विशिष्ट भारतीय समस्याओं' को हल करने की अद्वितीय क्षमता है।

Kavya Setu
A Multidisciplinary Open Access, Peer-Reviewed Refereed Journal
Impact Factor: 6.4 ISSN No: 3049-4176

यदि नीतिगत समर्थन, समावेशी पहुँच और लाभप्रदता-केंद्रित संस्कृति को संतुलित रूप से आगे बढ़ाया जाए, तो भारत न केवल स्टार्टअप की संख्या में, बल्कि नवाचार की गुणवत्ता एवं वैश्विक प्रभाव में भी एक अग्रणी राष्ट्र के रूप में उभर सकता है। संक्षेप में, भारतीय उद्यमिता का भविष्य संभावनाओं से भरपूर है, बशर्ते आने वाली चुनौतियों का दूरदर्शिता, अनुशासन एवं समावेशिता के साथ सामना किया जाए। आगामी दशक यह निर्धारित करेगा कि भारत इस ऐतिहासिक अवसर को एक स्थायी एवं समावेशी नवाचार-अर्थव्यवस्था में परिवर्तित कर पाता है या नहीं।

संदर्भ

1. चावला, पी., एवं ऋतु. (2021). भारतीय उद्यमिता के लिए अनुकूल वातावरण: साहित्य समीक्षा आधारित अध्ययन। इंटरनेशनल रिसर्च जर्नल ऑन एडवांस्ड साइंस हब, 3(4S), 245–250.
2. घोष, एस., एवं नंदा, आर. (2021). उभरते बाजारों में वेंचर कैपिटल निवेश और स्टार्टअप विकास। स्ट्रेटेजिक एंटरप्रेन्योरशिप जर्नल, 15(2), 185–208.
3. कृष्णा, एच., कश्यप, वाई., दत्त, डी., सागर, ए. डी., एवं मल्होत्रा, ए. (2022). भारत के निम्न-कार्बन ऊर्जा प्रौद्योगिकी स्टार्टअप परिदृश्य की समझ। नेचर एनर्जी, 8(1), 94–105.
4. कुशवाहा, एन., एवं पुंटाम्बेकर, जी. एल. (2022). भारत में स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र का विकास और विस्तार। इंटरनेशनल जर्नल फॉर रिसर्च इन इंजीनियरिंग एप्लीकेशन एंड मैनेजमेंट, 8(9), 61–67.
5. मागेश्वर, सी. आर., एवं जोतिमणि, के. (2022). भारत में उद्यमिता विकास: स्टार्टअप्स पर विशेष फोकस। इंटरनेशनल जर्नल ऑफ इंजीनियरिंग एंड मैनेजमेंट रिसर्च, 12(1), 144–148.
6. नैसकॉम. (2021). भारतीय प्रौद्योगिकी स्टार्टअप पारिस्थितिकी तंत्र रिपोर्ट 2021। नेशनल एसोसिएशन ऑफ सॉफ्टवेयर एंड सर्विस कंपनीज़।
7. पाण्डेय, एस., लॉल, एस., पाण्डेय, एस. के., एवं अहलावत, एस. (2017). सामाजिक उद्यमिता का आकर्षण: भारत से प्राप्त साक्ष्य। सोशल एंटरप्राइज जर्नल, 13(1), 73–94.
8. शर्मा, के., एवं माथुर, एच. पी. (2022). स्टार्टअप्स के संदर्भ में स्थिरता की अवधारणा का पुनर्परिभाषीकरण। प्रबन्धन: इंडियन जर्नल ऑफ मैनेजमेंट, 15(7), 8–23.
9. श्रीकांत, एम., कुमार, जी. एन., एवं रेड्डी, डब्ल्यू. आर. (2021). उद्यमिता, नवाचार एवं आर्थिक विकास: भारतीय अनुभव। सेडमे (स्मॉल एंटरप्राइज डेवलपमेंट, मैनेजमेंट एंड एक्सटेंशन जर्नल), 47(3), 279–292.
10. वर्धन, जे., एवं महतो, एम. (2022). विश्वविद्यालयों में व्यवसाय इनक्यूबेशन केन्द्रों की भूमिका एवं उद्यमिता पारिस्थितिकी तंत्र का विकास। जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप, एंटरप्रेन्योरशिप एजुकेशन एंड इनोवेशन, 8(1), 1–18.
11. यादव, एस. एस., सिंह, एस., एवं वर्मा, एम. (2022). नवाचारी कृषि-स्टार्टअप्स: भारत में कृषि के भविष्य को सशक्त बनाना। एएमसी इंडियन जर्नल ऑफ एंटरप्रेन्योरशिप, 5(2), 8–18.
12. यादव, वी., एवं उन्नी, जे. (2016). महिला उद्यमिता: शोध समीक्षा एवं भविष्य की दिशाएँ। जर्नल ऑफ ग्लोबल एंटरप्रेन्योरशिप रिसर्च, 6(12), 1–18.